भवानीप्रसाद मिश्र की कविता - चार कौए

बहुत नहीं थे सिर्फ चार कौए थे काले
उन्होंने यह तय किया कि सारे उड़ने वाले
उनके ढंग से उड़ें, रुकें, खायें और गायें
वे जिसको त्योहार कहें सब उसे मनायें ।

कभी-कभी जादू हो जाता है दुनिया में
दुनिया भर के गुण दिखते हैं औगुनिया में
ये औगुनिए चार बड़े सरताज हो गये
इनके नौकर चील, गरुड़ और बाज हो गये ।

हंस मोर चातक गौरैये किस गिनती में
हाथ बांधकर खड़े हो गए सब विनती में
हुक्म हुआ, चातक पंछी रट नहीं लगायें
पिऊ-पिऊ को छोड़ें कांव-कांव गायें।

बीस तरह के काम दे दिए गौरैयों को
खाना-पीना मौज उड़ाना छुटभैयों को
कौओं की ऐसी बन आयी पांचों घी में
बड़े-बड़े मनसूबे आये उनके जी में
उड़ने तक के नियम बदल कर ऐसे ढाले
उड़ने वाले सिर्फ रह गये बैठे ठाले ।

आगे क्या कुछ हुआ सुनाना बहुत कठिन है
यह दिन कवि का नहीं चार कौओं का दिन है
उत्सुकता जग जाये तो मेरे घर आ जाना
लंबा किस्सा थोड़े में किस तरह सुनाना ।...

सरकार की प्राथमिकता में आधारकार्ड देना है इसलिए वह सबको राशन नहीं दे पा रही

मिथुन प्रजापति

एक साहब बड़े देशभक्त थे। कहने लगे कि देश सर्वोपरि है, बाकी सब उसके बाद। मैंने कहा- पर प्राथमिकता तो देश के नागरिकों को मिलनी चाहिए। जब नागरिक ही नहीं रहेंगे तो देश कैसा ?

साहब जिद्दी थे और बड़े वाले देशभक्त तो थे ही, कहने लगे- जब देश ही नहीं रहेगा तो देशवासी कहाँ से रहेंगे ?

मैंने फिर पूछा- देश से आपका क्या तात्पर्य है ?

वे मुस्कुराते हुए कहने लगे- देश का तात्पर्य हमारी सीमा से है। फैली हुई जमीन से है।

हमने कहा- मतलब प्राथमिकता में देश की जमीन है ?

उन्होंने कहा- जी।

वे थोड़ा रुके, शायद कुछ सोच रहे थे। फिर अचानक थोड़ा चीखने जैसे लहजे में कहने लगे- देश की सीमा पर जवान जान देते हैं देश के लिए ही न, देश की जमीन के लिए ही न ?

मैंने उनकी हाँ में हाँ मिला दिया। जब बहस सेना तक पहुंच जाए तो चुप हो जाना चाहिए। क्योंकि तर्क के लिए कुछ नहीं बचता।

बात प्राथमिकता की थी। सबकी प्राथमिकताएं अलग-अलग होती हैं। आम आदमी कहेगा- क्या सीमा क्या देश, बस दो वक्त की रोटी और रोजगार का जुगा ? हो जाये यही मेरी प्राथमिकता में है। लेकिन भरे पेट वाला कहता है- देश सर्वोपरि है।

प्राथमिकता परिस्थिति और मानसिक के ऊपर निर्भर है। मेरे एक रिश्तेदार हैं। उनकी मानसिकता ये कहती है कि बिना बेटे के जिंदगी सफल नहीं हो सकती। उन्होंने बेटा पैदा करने को प्राथमिकता दे दी। अब उनकी नौ बेटियां हैं और बेटा एक भी नहीं। पर उन्होंने अपनी प्राथमिकता नहीं छोड़ी। पत्नी फिर गर्भवती है। लोग कहते हैं उम्मीद से हैं। कुछ लोग गर्भवती है कहने में असहज महसूस करते हैं। उन्हें लगता है कि यह शब्द असंस्कारी है इसलिए वे कहते हैं- उम्मीद से हैं।

पर संस्कार के चक्कर में वे ये भूल जाते हैं कि 'उम्मीद से हैं' वाक्य किसी धूर्त की खोज है। जब धूर्त खुले तौर पर यह नहीं कह पाया होगा- कि बेटा होने की उम्मीद लगाए बैठे हैं तब उसनें कह दिया होगा- पत्नी जी उम्मीद से हैं।

हां तो बात रिश्तेदार की थी। उन्हें दसवीं बार लड़का पैदा हो गया। खूब पटाखे फूटे, मिठाईयां बटीं। मुझे निमंत्रण के लिए फोन आया। मैंने कहा- भाई आपके और भी नौ बच्चे हुए पर कभी आपने मुझे निमंत्रण में नहीं बुलाया ?

वे कहने लगे- इस बार बेटा हुआ है।

मैं भड़क गया। वे असहज हो गए। मैंने उन्हें कहा- मेरी प्राथमिकता में बेटा- बेटी बराबर हैं। यदि आपने मुझे बेटी पैदा होने पर खुशी में शामिल होने के लिए बुलाया होता तो मैं आज जरूर आता। वे मेरी बात समझ तो गए पर गुस्से में फोन रख दिया।

इन घटनाओं में एक बात मैंने और नोटिस की है। महिलाओं के लिए कोई प्राथमिकता नहीं होती। उसकी प्राथमिकता उसके पिता, पति या बेटे की प्राथमिकता में निहीत है।

सरकार के एक मंत्री जी चिल्ला-चिल्लाकर भाषण में कहे जा रहे थे- हमारी प्राथमिकता में सबके हाथ आधारकार्ड पहुंचाना था और इसमें हम सफल होते दिख रहे हैं। आधार के हो जाने से घपले रुक जाएंगे। गरीबों का अनाज उन्हें पूरा मिलेगा।

एक भोला आदमी बीच में बोल पड़ा- साहब, हमार अधार बन तो गवा है पर रासन लेत की अंगूठा मैच नाही होत है। चार बार से रासन नाय मिला है सरकार।

मंत्री जी के अफसर ने कहा- आप बैठ जाइए। सरकार की प्राथमिकता अभी आधारकार्ड बनाने की है।

बात सही है। सरकार की प्राथमिकता में सबको आधारकार्ड देना है क्योंकि चुनाव के पहले आंकड़े भी तो पेश करने हैं। सरकार के पास दस्तावेज के आंकड़े होते हैं। भूख से मरने के आंकड़े रखने के लिए सरकार के पास कोई रजिस्टर नहीं है।

आखिर जरूरत भी तो नहीं है मौत के आंकड़ों की! चुनाव के भाषण में अब ये कोई थोड़ी कहेगा कि हमारे शासन में भूख से इतने लोग मर गए इसलिए आप हमें वोट दें।

समस्या विकट है। जिनका पेट भरा है वह कुछ बोलता नहीं और जिनके पास अनाज नहीं उनकी कोई सुनता नहीं। आखिर सुने भी कोई क्यों ? सब की परिस्थितियां अलग हैं, सब की प्राथमिकताएँ अलग हैं।

नहीं रहे इंसान को इंसान बनाने वाले कवि गोपालदास नीरज

(जनज्वार, दिल्ली)

मूर्ख पुजारी है वह जो कहता है
मन्दिर ईश्वर का घर,
मुल्ला भी वह बहका है जो कहता
वह मस्जिद के अन्दर,
मन्दिर-मस्जिद में ही उनका ईश्वर
और खुदा होता तो
मन्दिर में बन सकती मस्जिद;
मस्जिद में बन सकता मन्दिर

मशहूर गीतकार गोपालदास नीरज का 19 जुलाई की शाम तकरीबन साढ़े सात बजे 93 वर्ष की उम्र में दिल्ली के एम्स अस्पताल में निधन हो गया।

बेटे शशांक प्रभाकर ने मीडिया को जानकारी दी कि आगरा में प्रारंभिक उपचार के बाद उन्हें 18 जुलाई को दिल्ली के एम्स में भर्ती कराया गया था, लेकिन डॉक्टरों की तमाम कोशिशों के बाद भी उन्हें बचाया नहीं जा सका। उनके पार्थिव शरीर को अलीगढ़ ले जाया गया, जहां उनका अंतिम संस्कार किया गया।

उत्तर प्रदेश के इटावा जिले के पुरावली गांव में 4 जनवरी 1925 को जन्मे मशहूर गीतकार नीरज का पूरा नाम गोपालदास सक्सेना 'नीरज' था। वह मशहूर हिन्दी साहित्यकार ही नहीं, बल्कि फिल्मों के गीत लेखक के बतौर उनकी खासी पहचान है। 'लिखे जो खबर तुम्हेंज' जैसा एवरग्रीन गाना उन्हीं ने लिखा था। हिंदी साहित्य को उनके अतुलनीय योगदान के लिए भारत सरकार की तरफ से उन्हें पद्मश्री और पद्म भूषण सम्मान से नवाजा जा चुका है। हिंदी फिल्मों में सर्वश्रेष्ठ गीत लेखन के लिए नीरज को तीन बार फिल्म फेयर अवॉर्ड भी मिला।

वरिष्ठ पत्रकार और कवि विमल कुमार नीरज को याद करते हुए उनके प्रेम से जुड़ा एक बहुत ही प्यारा वाकया सुनाते हैं कि नीरज का एक प्रेम प्रसंग आज तक नही भूला। उन्होंने खुद एक इंटरव्यू में बताया था। वे जिस लड़की से प्रेम करते थे वो एक स्टेशन मास्टर की बेटी थी। नीरज एक गरीब परिवार के थे। लड़की के बाप ने शादी करने से मना कर दिया। जब नीरज बहुत सफल गीतकार बन गए तो 20 साल बाद उस लड़की के घर गए शायद वह मिले। संयोग से लड़की घर में थी। उसने दरवाजा खोला तो सामने देखकर अवाक रह गयी। बोली आप इतनी बड़ी हस्ती हैं। आपको अपने घर मे कहाँ बिठाऊँ, यह कह कर लड़की ने दरवाजा बन्द कर दिया।

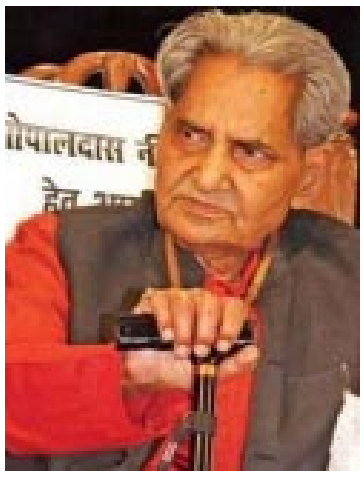

नीरज वापस मायूस होकर लौट गए। उन्होंने उस भेंटवार्ता में कहा मेरे जीवन की यह सबसे दर्दनाक और अविस्मरणीय घटना है। इसी को कहते हैं जिन्दगी।'

साहित्यकार हीरालाल नागर उनको श्रद्धांजलि देते हुए लिखते हैं, 'गीतकार नीरज नहीं रहे। हिन्दी के ऐसे गीतकार जिन्हें बच्चन जी के बाद मंच पर सर्वाधिक ख्याति मिली।

आइए पढ़ते हैं उन्हें श्रद्धांजलि देते हुए उनकी कुछ कविताएं—गीत

(1)

है बहुत अंधियार अब सूरज निकलना चाहिए
जिस तरह से भी हो ये मौसम बदलना चाहिए
रोज़ जो चेहरे बदलते है लिबासों की तरह
अब जनाज़ा ज़ोर से उनका निकलना चाहिए
अब भी कुछ लोगो ने बेची है न अपनी आत्मा
ये पतन का सिलसिला कुछ और चलना चाहिए
फूल बन कर जो जिया वो यहाँ मसला गया
जीस्त को फ़ौलाद के साँचे में ढलना चाहिए
छिनता हो जब तुम्हारा हक़ कोई उस वक़्त तो
आँख से आँसू नहीं शोला निकलना चाहिए

(2)

अब तो मज़हब कोई ऐसा भी चलाया जाए।
जिसमें इंसान को इंसान बनाया जाए।
जिसकी खुशबू से महक जाय पड़ोसी का भी घर
फूल इस क़िस्म का हर सिम्त खिलाया जाए।
आग बहती है यहाँ गंगा में झेलम में भी
कोई बतलाए कहाँ जाके नहाया जाए।
प्यार का खून हुआ क्यों ये समझने के लिए
हर अँधेरे को उजाले में बुलाया जाए।
मेरे दुख-दर्द का तुझ पर हो असर कुछ ऐसा
मैं रहूँ भूखा तो तुझसे भी न खाया जाए।
जिस्म दो होके भी दिल एक हों अपने ऐसे
मेरा आँसू तेरी पलकों से उठाया जाए।
गीत उन्मन है, ग़ज़ल चुप है, रूबाई है दुखी
ऐसे माहौल में 'नीरज' को बुलाया जाए।

3.

तुम कनन चुराकर बैठ गए जा महलों में
देखो! गांधी की अर्थी नंगी जाती है,
इस रामराज्य के सुघर रेशमी दामन में
देखो सीता की लाज उतारी जाती है,
उस ओर श्याम की राधा वह वृन्दावन में
आलिंगन-चुम्बन बेच पेट भर पाती है ।
हो सावधान! सँभलो ओ ताज-तख्तवालो!
भूखी धरती अब भूख मिटाने आती है।

4.

मूर्ख पुजारी है वह जो कहता है मन्दिर ईश्वर का घर,
मुल्ला भी वह बहका है जो कहता वह मस्जिद के अन्दर,
मन्दिर-मस्जिद में ही उनका ईश्वर और खुदा होता तो
मन्दिर में बन सकती मस्जिद; मस्जिद में बन सकता मन्दिर।

5.

यद्यपि कर निर्माण रहे हम
एक नयी नगरी तारों में
सीमित किन्तु हमारी पूजा
मन्दिर मस्जिद गुरुद्वारों में
यद्यपि कहते आज कि हम सब
एक हमारा एक देश है
गूंज रहा है किन्तु घृणा का
तार बीन की झंकारों में
गंगा ज़मज़म के पानी में
घुली मिली जिंदगी हमारी
मासूमों के गरम लहू से
पर दामन आज़ाद नहीं है।
तन तो आज स्वतंत्र हमारा
लेकिन मन आज़ाद नहीं है।

काश बीमार भगवान की मौत हो जाती.....

-चंद्रभूषण सिंह यादव

भगवान बीमार थे वह भी आमरस पीने से।पुजारी ने भगवान के बदन दर्द को मिटाने के लिए मालिश किया है।डॉक्टर ने आला लगा करके भगवान का चेकअप भी कर लिया है।भगवान सेव-फल,काजू-मेवा आदि खाकर अपना स्वास्थ्य बना रहे हैं।अब भगवान स्वस्थ हो गए हैं।अजीब मंजर और खबर है।सर्वशक्तिमान भगवान और बीमार ?सबको अन्न-धन,नौकरी-चाकरी या यूं कहिये कि मन की सारी मुरादें पूर्ण करने वाला ईश्वर बीमार ?

भगवान बीमार और वह भी आमरस पीने से ? भगवान को बदन दर्द और किया गया मालिस ? भगवान काजू,मेवा,फल आदि खाकर हुए स्वस्थ ? भगवान का चेकअप किया डॉक्टर ?अजब-गजब है यह सब कुछ।भगवान या ईश्वर का कॉन्सेप्ट ही धूर्त लोगो ने बनाया है जिसे पूरी मजबूती से गड़ेरिया के घर मे जन्मे पेरियार रामास्वामी नायकर ने स्पष्ट शब्दों में कह दिया है कि ईश्वर को धूर्तो ने बनाया है और मूर्ख पूजते हैं।पेरियार द्वारा उपजाई गयी चेतना का असर है कि तमिलनाडु का वंचित समाज उस दौर में पेरियार से प्रभावित हो ईश्वर से विमुख हुवा तो 70 प्रतिशत आरक्षण के साथ तमिलनाडु में सर्वाधिक प्रभावशाली भूमिका में है वरना तो देश भर में कांवर आदि लेकर हर साल मुरादें मांगने वाला वंचित समाज इन बीमार हो जाने वाले भगवानो के पास अपनी बीमार मन:स्थिति के साथ जा ही रहा है और घण्टा बजा-बजा अपनी गाढ़ी कमाई पुरोहित को दे मन्नत पूरी होने की प्रत्याशा के साथ चला आ रहा है और हर साल इस क्रम को दुहरा रहा है।

चीन/जापान आदि जैसे अनीश्वरवादी या अमेरिका आदि जैसे एकेश्वरवादी देश आज पूरी दुनिया के सिरमौर बने हुए हैं।सारे अनुसन्धान यहां हो रहे हैं।हर नई तकनीक का ईजाद ये कर रहे हैं।यहां का उत्पादित सामान 33 करोड़ भगवानो वाला देश भारत खपा रहा है। दीपावली में दीपक,मोमबत्ती से लेकर झालर तक चाइनिज प्रयुक्त हो रहा है। होली में रंग से लेकर पिचकारी तक चाइनिज प्रयुक्त हो रहा है।बुलेट ट्रेन जापान से तो पटेल साहब की मूर्ति निर्माण से लेकर बैकिंग का कारोबार तक रामभक्त सरकार चीन से करवाने को आतुर है।चाइनिज मोबाइल ब्यापार भारत मे छा गया है।अमेरिका बॉस बना घूम रहा है जहां भगवानो का कोई स्थान नही है पर भारत मे कदम-कदम पर ये बीमार भगवान ही भगवान हैं जो कहीं अपच के शिकार हैं तो कहीं दर्द से परेशान हैं और उन्हें स्वस्थ बनाने के लिए यहां का गरीब-गुरबा,वंचित-उपेक्षित अपनी गाढ़ी कमाई चढ़ावा में चढ़ता आ रहा है जिसे भगवान के नाम पर खाकर कुछ लोग तोंद फुलाये प्रवचन कर रहे हैं।

जब अखबारों में पढ़ा कि भगवान बीमार हैं तो मन मे आया कि जिस तरीके से इलाज के बावजूद गरीब आदमी मर जा रहा है,काश यह भगवान भी वैसे ही मर जाता।काश यह भगवान बीमारी से उबरने की बजाय मर जाता तो कम से कम भारत मे तो करोड़ो गरीब,पिछड़े/दलित इसकी त्रासदी से मुक्त हो जाते।सड़क पर भंडारा,अतिक्रमण कर मन्दिर निर्माण,महीनों तक कांवर यात्रा,वैष्णो-अमरनाथ आदि की दुर्गम चढ़ाई,भगवान के नाम पर फसाद आदि से इस देश का निरीह,गरीब यह सोचकर उबर जाता कि जाने दो बीमार हो हमारा भगवान मर गया अब उसका क्रिया-कर्म कर अपने काम मे निश्चिंत भाव से लग लिया जाय और इस देश को चीन, जापान, अमेरिका की तरह बनाया जाय लेकिन फिर कुछ ही दिनों बाद जब यह पढा कि भगवान का डॉक्टर ने चेकअप किया है।दवा-इलाज,मालिस आदि हुवा है।वे काजू,मेवा व फल आदि खाकर पुन: स्वस्थ हो गए हैं तो मुझे बड़ी निराशा हुई कि यह भगवान बीमारी से उबर अब फिर करोड़ो वंचित समाज के लोगो को पूर्व की भांति आगे भी अपनी अंधभक्ति में बीमार बनाये रखेगा और वे अपनी गाढ़ी कमाई ऐसे भगवानो को समर्पित करता रहेगा।

काश कथित रूप से बीमार पड़ा भगवान मर गया होता तो भारत का कमेरा अंधभक्त लूट से बच अब से भी कुछ संभल गया होता पर दुखद है कि ऐसा नही हुआ और भगवान पुन: स्वस्थ हो गया।